जलवायु परविर्तन के लयि कतिना तैयार है भारत

प्रलिमि्स के लयि

वशि्व जोखमि सूचकांक, वशि्व जोखमि रपिोर्ट

मेन्स के लयि

जलवायु परविर्तन के प्रतभिारत की सुभेद्यता

चर्चा में क्यों?

वशि्व जोखमि सूचकांक (World Risk Index-WRI)- 2020 के अनुसार, गंभीर प्राकृतकि आपदाओं के प्रतअित्यधकि सुभेद्यता के कारण भारत 'जलवायु वास्तवकिता' से नपिटने के लयि 'खराब रूप से तैयार' (Poorly Prepared) था।

सूचकांक के प्रमुख बदिु

- **WRI-2020 में भारत 181 देशों में 89वें स्थान पर था। बांग्लादेश, अफगानस्तिान और पाकस्तिान के पश्चात् भारत जलवायु परविर्तन के कारण दक्षणि एशयिा में चौथा सबसे अधकि जोखमि वाला देश है।**
- रपिोर्ट के अनुसार, श्रीलंका, भूटान और मालदीव ने गंभीर आपदाओं से नपिटने के लयि भारत की तुलना में बेहतर प्रदर्शन कयिा है। भारत चरम घटनाओं से नपिटने की तैयारयिों के मामले में इन तीन पड़ोसी देशों से पीछे रह गया।
- भारत और अन्य दक्षणि एशयिाई देशों ने एक वर्ष के दौरान वशि्व जोखमि सूचकांक में अपनी रैंकगि में मामूली सुधार कयिा है। भूटान ने अपनी रैंकगि में सबसे अधकि सुधार कयिा। भूटान के पश्चात् पाकस्तिान का स्थान रहा है।
- WRI-2019 की तुलना में सभी दक्षणि एशयिाई देश जलवायु आपातकाल की वास्तवकिता से नपिटने के लयि रैंकगि में अनुकूल क्षमता नरि्माण के मामले में भी फसिल गए।

देश	**अनुकूलन क्षमता (WRI-2020)** **(100 में से)**	**अनुकूलन क्षमता (WRI-2019)** **(100 में से)**
अफगानस्तिान	92.09	59.75
बांग्लादेश	85.81	54.44
भूटान	72.82	46.65
भारत	78.15	48.4
मालदीव	76.51	36.29
नेपाल	83.34	48.85
पाकस्तिान	84.81	51.62
श्रीलंका	77.3	39.94

- भारत भी जलवायु परविर्तन के अनुकूल क्षमताओं को मज़बूत करने में असफल रहा है। देश की पहली 'व्यापक जलवायु परविर्तन मूल्यांकन रपिोर्ट' में 'जलवायु संकट' के खतरों के बारे में चेतावनी दी गई है।
- सूचकांक के अनुसार, 52.73 से ऊपर के स्कोर वाले देश गंभीर प्राकृतकि आपदाओं के अनुकूल अपनी क्षमताओं के नरि्माण में 'बहुत खराब' (Very Poor) थे।

देश	**वशि्व जोखमि सूचकांक- 2020 में रैंक**	**वशि्व जोखमि सूचकांक- 2019 में रैंक**
अफगानस्तिान	57	53
बांग्लादेश	13	10

भूटान	152	143
भारत	89	85
मालदीव	171	169
नेपाल	121	116

छोटे द्वीपीय राष्ट्र

- सूचकांक के अनुसार, ओशनिया सबसे अधिक जोखिम वाला महाद्वीप था, जिसके पश्चात् अफ्रीका और अमेरिका महाद्वीप थे।
- वानुअतु दुनिया भर में सबसे अधिक प्राकृतिक आपदा जोखिम वाला देश था। इसके पश्चात् टोंगा और डोमिनिका का स्थान था।
- छोटे द्वीपीय राज्य, विशेष रूप से दक्षिण प्रशांत महासागरीय और कैरिबियन द्वीप, अत्यधिक प्राकृतिक घटनाओं के कारण उच्च जोखिम वाले देशों की श्रेणी में आते हैं। इनमें भूमंडलीय तापन के परिणामस्वरूप समुद्र जल स्तर में वृद्धि के कारण उत्पन्न जोखिम वाले देश भी शामिल थे।
- जलवायु परिवर्तन में कम योगदान के बावजूद, छोटे द्वीपीय राष्ट्र सीमित वित्तीय संसाधनों के कारण जलवायु परिवर्तन के परिणामों से सबसे अधिक प्रभावित हुए थे।
- इन छोटे देशों को जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूल क्षमता निर्माण के लिये केवल वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराना ही पर्याप्त नहीं है। रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि जलवायु परिवर्तन के कारण पहले से हो चुकी क्षति के लिये उन्हें मुआवजा दिया जाना चाहिये।
- सूचकांक के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के कारण कतर सबसे कम जोखिम वाला देश (0.31) था।

अफ्रीका

- रिपोर्ट में अफ्रीका को सुभेद्यता के हॉटस्पॉट रूप में पहचाना गया है। दुनिया के सबसे सुभेद्य देशों में से दो-तिहाई से अधिक देश अफ्रीका महाद्वीप में स्थित थे।
- सेंट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक सबसे सुभेद्य देश था। इसके पश्चात् चाड, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कॉन्गो, नाइजर और गिनी-बिसाऊ का स्थान था।

जलवायु परिवर्तन के प्रति भारत की अधिक सुभेद्यता

- भारत की सूखा, बाढ़ और उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के प्रति अधिक प्रवणता के कारण इस सदी के अंत तक जलवायु परिवर्तन भारत के लिये एक बड़ा संकट खड़ा कर सकता है।
- 'पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय' के तत्त्वाधान में **भारतीय क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन का आकलन**' **(Assessment Of Climate Change Over The Indian Region)** शीर्षक वाली जलवायु परिवर्तन पर भारत सरकार की अब तक की पहली रिपोर्ट के अनुसार, इस सदी के अंत तक भारत के औसत तापमान में 4.4 डिग्री की वृद्धि हो सकती है, जिसका सीधा प्रभाव लू, हीट वेव्स और चक्रवाती तूफानों की बारंबारता में वृद्धि के साथ समुद्री जल स्तर में वृद्धि के रूप में दिखाई देगा।
- इस रिपोर्ट के अनुसार, यदि जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिये बड़े कदम नहीं उठाए गए तो हीट वेव्स की बारंबारता में 3 से 4 गुना की वृद्धि और समुद्र जल के स्तर में 30 सेंटीमीटर तक की वृद्धि हो सकती है।
- पिछले 30 वर्षों (वर्ष 1986-वर्ष 2015) में सबसे गर्म दिन और सबसे ठंडी रात के तापमान में क्रमश: 0.63 डिग्री और 0.4 डिग्री की वृद्धि हुई है। रिपोर्ट यह भी कहती है कि गर्म दिनों और गर्म रातों की बारंबारता में 55-70 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है। भारत के लिये यह अनुमान अच्छी खबर नहीं है क्योंकि वह उन देशों में है जो जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित हो सकते हैं।
- रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 1951-वर्ष 2015 के बीच मानसून से होने वाली वर्षा में 6 प्रतिशत की कमी हुई है, जिसका प्रभाव गंगा के मैदानी भागों और पश्चिमी घाट पर देखा जा सकता है। वर्ष 1951-वर्ष 1980 की तुलना में वर्ष 1981-वर्ष 2011 के बीच सूखे की घटनाओं में 27 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मध्य भारत में अतिवृष्टि की घटनाओं में वर्ष 1950 के पश्चात् से अब तक 75 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- इस सदी के प्रथम दो दशकों (वर्ष 2000-वर्ष 2018) में तटीय क्षेत्रों में आने वाले शक्तिशाली चक्रवाती तूफानों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। मौसमी कारकों की वजह से उत्तरी हिन्द महासागर में अब और अधिक शक्तिशाली उष्णकटिबंधीय चक्रवात उत्पन्न हो सकते हैं।

विश्व जोखिम सूचकांक (WRI)

- WRI संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय के पर्यावरण और मानव सुरक्षा संस्थान (UNU-EHS) और बुंडनीस एंट्विक्लिंग हिलफ्ट (Bundnis Entwicklung Hilft) द्वारा जर्मनी के स्टुटगार्ट विश्वविद्यालय के सहयोग से 15 सितंबर को जारी विश्व जोखिम रिपोर्ट-2020 का हिस्सा है।
- WRI की गणना प्रत्येक देश के आधार पर जोखिम और सुभेद्यता के गुणन के माध्यम से की जाती है। WRI को 2011 के पश्चात् से प्रतिवर्ष जारी किया जाता है।
- यह सूचकांक दर्शाता है कि कौन से देशों को चरम प्राकृतिक घटनाओं से निपटने और अनुकूलन के लिये क्षमता निर्माण की आवश्यकता है।

आगे की राह

- भारत की 50% से अधिक कृषि वर्षा पर निर्भर है। यहाँ हिमालयी क्षेत्र में हजारों छोटे-बड़े ग्लेशियर हैं और पूरे देश में कई एग्रो-क्लाइमेटिक जोन

हैं। वशि्व बैंक के अनुसार, मौसम की अनशि्चतिता और प्राकृतकि आपदाओं भारत को कई लाख करोड़ डॉलर की क्षतहिो सकती है।
- इस खतरे से नपिटने के लयि भूमंडलीय तापन में योगदान करने वाली मानवजनति गतविधियिों पर नयिंत्रण और जलवायु के बेहतर पूर्वानुमान की आवश्यकता है।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/how-ready-is-india-for-climate-change-not-much-says-this-report